

# डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 1, लेखकत्व, तिथि और शैली

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 1, लेखकत्व, तिथि और शैली है।

नए नियम में हमारे पास कई पत्र हैं जो हमें दिखाते हैं कि विशेष समस्याओं से कैसे निपटा गया।

हमारे पास सुसमाचार हैं जो हमें हमारे प्रभु के जीवन के बारे में अधिक बताते हैं। लेकिन हमारे पास नए नियम में एक पुस्तक है जो वास्तव में प्रारंभिक चर्च के जीवन को एक कथात्मक तरीके से चित्रित करती है। पुस्तक का विषय प्रारंभिक चर्च का मिशन है, और उन्होंने यीशु के मिशन को कैसे आगे बढ़ाया और उनके महान आदेश का पालन किया।

हम इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाते हैं। और हम प्रमुख विषयों को उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण लंबे परिचय के साथ अधिनियमों की पुस्तक शुरू करने जा रहे हैं। और फिर हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के कुछ भागों का कुछ कम विस्तार से अध्ययन करेंगे और उनका नमूना लेंगे।

प्रेरितों के काम की पुस्तक, हम इसे ल्यूक भाग दो कह सकते हैं, क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे ल्यूक का सुसमाचार प्रेरितों के काम की पुस्तक में आगे बढ़ाया गया है। ल्यूक का सुसमाचार वह सब कुछ है जो यीशु ने करना और सिखाना शुरू किया। और प्रेरितों के काम की पुस्तक दिखाती है कि कैसे यीशु अपने अनुयायियों के माध्यम से कार्य करता रहा।

खैर, अधिनियम हमें कई चर्चों की शुरुआत बताता है। और इसलिए, पॉल के पत्रों की पृष्ठभूमि पर विचार करते समय यह उपयोगी है। उदाहरण के लिए, रोमन एक मिश्रित चर्च थे, जिसमें एक बार केवल अन्यजातियों का समावेश था।

थिस्सलुनिकियों को बड़े पैमाने पर गैर-यहूदी चर्च में दूसरे राजा, एक यीशु पर विश्वास करने के लिए सताया गया। खैर, एथेनियाई लोगों, यह इसे कैनन में शामिल नहीं कर सका। लेकिन किसी भी मामले में, हमें कई पत्रों की पृष्ठभूमि मिलती है, भले ही वह अधिनियमों का मूल उद्देश्य नहीं था।

यह उस तरह से हमारी मदद करता है। आइए अधिनियमों के लेखकत्व के प्रश्न को देखकर शुरुआत करें। हम वास्तव में अधिनियमों की कथावस्तु को देखे बिना उसके लेखकत्व को संबोधित नहीं कर सकते।

अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि हम कथाएँ पॉल के एक साथी द्वारा लिखी गई थीं। और इसका अच्छा कारण है। लेकिन कुछ विद्वान आपत्ति जताते हैं।

और उसके कारण भी हैं। आप बता सकते हैं कि मैं कहां खड़ा हूं क्योंकि मैंने एक के लिए अच्छे कारण बताए और दूसरे के लिए मैंने सिर्फ कारण बताए। लेकिन किसी भी मामले में, हमारे अनुभाग में आख्यान कहीं अधिक विस्तृत हैं।

कोरिंथ में 18 महीने और इफिसस में दो साल से अधिक लंबे प्रवास की तुलना में फिलिप्पी में बिताए गए कुछ हफ्तों के बारे में अधिक विवरण हैं। इसके अलावा, हम कहां से शुरू करते हैं और कहां छोड़ते हैं। 1610 और उसके बाद, हम पाते हैं कि हम त्रोआस से फिलिप्पी की ओर बढ़ना शुरू करते हैं।

पॉल और सिलास के फिलिप्पी छोड़ने के बाद, हम अलग हो गए। लेकिन वर्षों बाद, जब प्रेरितों के काम अध्याय 20 में पॉल फिलिप्पी में वापस आता है, तो हम फिर से शुरू करते हैं और मूल रूप से प्रेरितों के काम की किताब के अंत तक जारी रहते हैं, जब भी कोई यात्रा होती है। हम पृष्ठभूमि में रहते हैं।

पहले व्यक्ति का उल्लेख केवल वहीं किया जाता है जहां स्वयं को शामिल करना आवश्यक होता है, स्वयं का उल्लेख किए बिना, यह उल्लेख किए बिना कि वह क्या कर रहा था। वह अभी ग्रुप में शामिल है। अब, कुछ लोगों ने 'हम' को उस अर्थ से भिन्न मान लिया है जिसे हम आमतौर पर 'हम' से समझते हैं।

सामान्यतः हमारा मतलब होता है मैं और कोई और। लेकिन, आप जानते हैं, विद्वानों के रूप में, हम जटिल चीजों को सरल बनाकर अपना जीवन यापन करते हैं। और दुर्भाग्य से, कभी-कभी सरल चीजों को जटिल बनाकर।

इसलिए, मुझे हमारे बारे में इन अन्य विचारों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह काल्पनिक होना चाहिए। इसका कारण यह है, क्योंकि वे सोचते हैं कि ल्यूक द्वारा पॉल की सोच का चित्रण पॉल के पत्रों में पॉल की सोच के चित्रण से भिन्न है।

खैर, इसमें कुछ सच्चाई है। कोई नहीं कहता कि पॉल ने प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखी। जाहिर है, ल्यूक एक अलग व्यक्ति है।

लेकिन वह इतना अलग व्यक्ति नहीं है कि हमें यह मान लेना चाहिए कि वह उसे नहीं जानता होगा या उसके साथ यात्रा नहीं कर सकता होगा। आखिरकार, यदि मेरे किसी छात्र को मेरे जीवन की जीवनी लिखनी हो, और, आप जानते हैं, आप देखेंगे कि वे किस चीज़ पर ज़ोर देना चुनते हैं, वे मेरे बारे में जिस चीज़ पर ज़ोर देना चुनेंगे वह शायद उससे भिन्न होगा जो मैं चुनूंगा मेरे बारे में जोर दें। वास्तव में, ल्यूक के पॉल के धर्मशास्त्र के चित्रण और पॉल के स्वयं के पॉल के धर्मशास्त्र के चित्रण के बीच विद्वानों ने अक्सर जो प्रमुख अंतर देखा है, वह यह है कि, ठीक है, अधिनियमों में, पॉल कानून के प्रति अनुकूल है, जबकि पॉल के पत्रों में, पॉल इसके खिलाफ है। कानून।

खैर, यह पॉल का बहुत ही संवेदनशील पाठ है। मैं ऐतिहासिक रूप से यह नहीं कहूंगा कि यह कहां से आया, लेकिन मैं कहूंगा कि पिछले कुछ दशकों में, पॉलीन के अधिकांश विद्वानों ने उस दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया है। वे अब यह नहीं कहते कि पॉल कानून के खिलाफ था।

इसलिए, अधिनियमों के विद्वान जो ल्यूक के पॉल को पॉल के पॉल से अलग करने की कोशिश करने के लिए उस विरोधाभास का उपयोग कर रहे हैं, उन्हें अपनी पॉलीन छात्रवृत्ति को पकड़ने की आवश्यकता है। लेकिन किसी भी मामले में, वे यह क्यों मानते हैं कि यह एक काल्पनिक बात है? हमारे पास उपन्यासों जैसे काल्पनिक दस्तावेजों में काल्पनिक हम या काल्पनिक मैं हैं। हमारे पास ऐतिहासिक कार्यों में आम तौर पर काल्पनिक हम या काल्पनिक मैं नहीं है, जिसके बारे में अधिकांश विद्वान सहमत हैं कि अधिनियमों की पुस्तक है।

सभी इस बात पर सहमत नहीं हैं कि यह कितना ऐतिहासिक है, लेकिन बहुमत इस बात पर सहमत है कि एक्ट्स एक ऐतिहासिक मोनोग्राफ है। और यह प्राचीन इतिहासलेखन का कार्य है। 20वीं सदी के आरंभिक प्रसिद्ध हार्वर्ड क्लासिकिस्ट, सर आर्थर डार्वी नॉक ने कहा कि अधिक से अधिक वह ऐतिहासिक साहित्य में, गैर-काल्पनिक साहित्य में एक उदाहरण के बारे में सोच सकते हैं, जहां प्रथम-व्यक्ति बहुवचन या प्रथम-व्यक्ति अवधि का उपयोग काल्पनिक रूप से किया गया था।

ऐतिहासिक कार्यों में लगभग सभी मामलों में, प्रथम-व्यक्ति का मतलब था कि लेखक वहां होने का दावा कर रहा था या लेखक लिखने का दावा कर रहा था या ऐसा ही कुछ। इसके अलावा, यदि यह काल्पनिक होता, तो यह केवल इन स्थानों पर ही काल्पनिक क्यों होता ताकि यह फिलिप्पी में छूटता और फिलिप्पी में शुरू होता? और यह ऐसी अस्पष्ट जगहें हैं। मेरा मतलब है, आप सोचेंगे कि हमने पूरी कथा को आगे बढ़ाया होगा।

हम यीशु के शिष्य हो सकते थे। हम खाली कब्र पर मौजूद हो सकते थे। हम पेंटेकोस्ट में उपस्थित हो सकते थे।

लेकिन लेखक ऐसा नहीं कह सकता क्योंकि जाहिर तौर पर दर्शक जानते हैं कि लेखक कौन है और वे जानते हैं कि लेखक कब पॉल के साथ था और कब लेखक पॉल के साथ नहीं था। हम बहुत ही अस्पष्ट तरीके से प्रकट होते हैं। लेखक उपस्थित होने को लेकर कोई बड़ी बात करने की कोशिश नहीं कर रहा है।

लेखक बस उन बिंदुओं पर खुद को शामिल कर रहा है जहां लेखक मौजूद था। कुछ लोग कहते हैं कि यह काल्पनिक नहीं है, हालांकि कुछ ने कहा है, ठीक है, समुद्री यात्राओं में आपकी यह काल्पनिक उपस्थिति है। इसका उत्तर विद्वानों द्वारा बहुत दृढ़ता से दिया गया है जिन्होंने दिखाया है कि अधिकांश यात्राओं में हम नहीं होता है।

जब हम वहां होते हैं, तो आम तौर पर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लेखक वहां होने का दावा कर रहा था। और समुद्री यात्राओं के बाहर, यह समुद्री यात्राओं के समान ही है। इसलिए अधिकांश विद्वानों ने उस दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया है।

लेकिन कुछ विद्वानों ने कहा है, ठीक है, यह काल्पनिक नहीं है। यह एक यात्रा पत्रिका से संबंधित है। और यह पूरी तरह संभव है।

यह संभव है कि यह एक ध्यान रखें, ल्यूक ने अपने पहले खंड की शुरुआत में कई संभावित स्रोतों का उल्लेख किया है। उन्होंने ऐसी सामग्री प्राप्त करने का उल्लेख किया है जो प्रत्यक्षदर्शियों के पास जाती है। संभवतः, उनके पास आने वाली बहुत सी सामग्री प्रथम-व्यक्ति के रूप में आ सकती थी।

और फिर भी कहीं और वह प्रथम-पुरुष रूप को सुरक्षित नहीं रखता है। ल्यूक इस बिंदु पर, और केवल इसी बिंदु पर इस सामग्री का अयोग्य संपादक क्यों बनेगा? क्या इसकी अधिक संभावना नहीं लगती कि यदि कोई यात्रा पत्रिका उपयोग में थी, तो वह ल्यूक की अपनी यात्रा पत्रिका थी? इसलिए, यदि यह एक यात्रा पत्रिका होती, जिसमें हम भी शामिल होते, तो यह ल्यूक की यात्रा पत्रिका होती। अन्य प्राचीन साहित्य में, सामान्यतः हम का अर्थ हम होता है, ठीक वैसे ही जैसे आज होता है।

इसलिए सरल को जटिल बनाने के बजाय, हम इसे सरल ही छोड़ देंगे। और आमतौर पर, मैं कह सकता हूँ कि मैं विद्वता को लेकर एक मजबूत सहमति में हूँ। इस बिंदु पर बहस चल रही है।

लेकिन व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगता है कि मामला इतना मजबूत है कि मैं यह कहने जा रहा हूँ कि मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक मजबूत मामला है। लेकिन यह साथी कौन था जो हम में माना जाता है? यह प्रथम-पुरुष आवाज़ कौन है? खैर, हम कुछ ऐसे लोगों के बारे में जानते हैं जो पॉल के साथ गए थे।

कुलुस्सियों 4.10 और फिलेमोन 24 में, उसने अरिस्टार्कस के रोम में उसके साथ होने का उल्लेख किया है। हालाँकि, प्रेरितों के काम अध्याय 27 में अरिस्टार्कस को पहले व्यक्ति से विशेष रूप से अलग किया गया है। तो, यह वह व्यक्ति है जो अरिस्टार्कस और पॉल के साथ था लेकिन अरिस्टार्कस नहीं था।

यह इपफ्रास हो सकता है। इपफ्रास भी रोम में पॉल के साथ है, लेकिन यहां लाइकस घाटी में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई गई है। आप सोचेंगे कि इपफ्रास, जिसका गृह चर्च जहाँ उसने सबसे अधिक परिश्रम किया था, लाइकस घाटी में था। आप सोचते होंगे कि यह अधिनियमों की पुस्तक में कहीं दिखाई देगा, लेकिन वहां लाइकस घाटी में कोई दिलचस्पी नहीं है।

देमास भी रोम में पॉल के साथ था, लेकिन परंपरा कहती है कि वह दृढ़ नहीं रहा। 2 तीमुथियुस अध्याय 4 कहता है, देमास ने मुझे त्याग दिया है। तो, संभावना यह है कि उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक नहीं लिखी।

अब एक और मजबूत उम्मीदवार है जिसका आम तौर पर उल्लेख नहीं किया जाता है, मुझे लगता है, और वह टाइटस है। तीतुस पौलुस का घनिष्ठ साथी था। और किसी कारण से, टाइटस

का उल्लेख अधिनियम की पुस्तक में नाम से नहीं किया गया है, जब तक कि वह टिमोथी जैसा ही व्यक्ति न हो, जैसा कि मेरे एक मित्र ने तर्क दिया है।

लेकिन मुझे लगता है कि व्यक्तिगत रूप से इसके खिलाफ कुछ ठोस कारण हैं, जिनमें से एक यह है कि हमारे पास 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस अलग-अलग हैं। लेकिन किसी भी मामले में, मुझे लगता है कि टाइटस एक उम्मीदवार हो सकता है। समस्या यह है कि जब पॉल रोम में अपने साथियों की सूची बनाता है, तो टाइटस उनमें से नहीं है।

तो, एक साथी है जो रोम में सूचीबद्ध है, जिसका नाम प्रेरितों के काम की पुस्तक में नहीं है, और वह ल्यूक है। आश्चर्य की बात नहीं, प्रारंभिक चर्च का सर्वसम्मत दृष्टिकोण यह था कि ल्यूक ल्यूक के सुसमाचार और अधिनियमों की पुस्तक का लेखक था। दिलचस्प बात यह है कि, आप उम्मीद करेंगे कि यदि किसी को किसी लेखक के बारे में कोई परंपरा बनानी है, तो वे लेखक के रूप में किसी बहुत ही प्रमुख व्यक्ति को बनाएंगे।

ल्यूक उतना प्रमुख नहीं था। इसलिए, बाहरी साक्ष्य और आंतरिक साक्ष्य दोनों मिलकर लेखक के रूप में ल्यूक का पक्ष लेते हैं। और कभी-कभी जब आप किसी काम के लेखक के बारे में बात करते हैं, तो आप केवल पारंपरिक पारंपरिक लेखक के नाम का उपयोग करते हैं, क्योंकि आपके पास उपयोग करने के लिए कोई बेहतर नाम नहीं होता है।

लेकिन इस मामले में, जब मैं ल्यूक कहता हूँ, तो मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूँ कि ल्यूक लेखक था। खैर, लेखकत्व की परंपरा बहुत मजबूत है। क्लासिकिस्ट आमतौर पर बाहरी साक्ष्य से शुरुआत करते हैं, और यहां बाहरी साक्ष्य बहुत मजबूत है।

परंपरा ल्यूक है। मार्सिओनाइट विरोधी प्रस्तावना वास्तव में कहती है कि यह ल्यूक था, जो एंटीओक का एक डॉक्टर था। कुलुस्सियों 4:14 ल्यूक के डॉक्टर होने पर फिट बैठता है, हालाँकि प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम जो देखते हैं, उसे देखते हुए मैं नहीं मानता कि वह अन्ताकिया से था।

इसमें कहा गया है कि वह अकेले रहे और 84 वर्ष की आयु में ग्रीस के बोईओटिया में उनकी मृत्यु हो गई। मैं उन कुछ अन्य विवरणों के बारे में नहीं जानता, लेकिन यह इस सबूत के अनुरूप है कि ल्यूक लेखक थे। हमारे पास दूसरी शताब्दी के अंत में आइरेनियस, दूसरी शताब्दी के अंत में अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट, ओरिजन और टर्टुलियन से मजबूत सबूत हैं।

अब, ल्यूक ने अधिनियमों की पुस्तक और ल्यूक के सुसमाचार में जिसे भी संबोधित किया, वे जानते थे कि लेखक कौन था। उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वह कौन था। वह प्रस्तावना में 'मैं' कह सकता है।

वह हम बाद में कह सकते हैं। जिन लोगों को ऐसी रचनाएँ मिलीं उनमें से अधिकांश लोग जानते थे कि लेखक कौन था, और इसे मुख्य रूप से बताने की आवश्यकता नहीं थी। कभी-कभी ऐसा होता था, कभी-कभी ऐसा नहीं होता था।

और ल्यूक के मामले में, हम जानते हैं कि उसके दर्शकों के कम से कम एक हिस्से, उसके आदर्श दर्शकों के हिस्से के रूप में उसके समर्पित व्यक्ति का नाम थियोफिलस है। और थियोफिलस निस्संदेह जानता था कि लेखक कौन था। इसलिए, पुस्तक में इसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन आम तौर पर लेखकत्व उन अंतिम विवरणों में से एक था जिसे भुला दिया जाएगा।

और इसलिए, यहां हम कुछ पीढ़ियों के बारे में बात कर रहे हैं जहां इसे आगे बढ़ाया जा सकता है, और हम सर्वसम्मति के बारे में बात कर रहे हैं। मेरा मतलब है, अगर इसे सटीक रूप से पारित नहीं किया गया होता, तो रोमन साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में आपके पास अलग-अलग परिकल्पनाएं उत्पन्न होतीं, लेकिन हमारे पास एकमत है। इसके अलावा, 175 और 225 ईस्वी के बीच का एक पपीरस, पी75, गॉस्पेल को ल्यूक का गॉस्पेल कहता है, और लगभग हर कोई इस बात से सहमत है कि एक ही लेखक ने ल्यूक और एक्ट्स दोनों को लिखा है।

ल्यूक परंपरा में प्रमुख नहीं थे, फिर भी लेखकीय परंपरा एकमत है। लेखक के रूप में यीशु के गैर-प्रेषित और गैर-चश्मदीद गवाह का आविष्कार कौन करेगा? हमारे पास इसके खिलाफ कोई सबूत नहीं है। ल्यूक के बारे में हम जो बहुत कम जानते हैं, यह उससे मेल खाता है।

दिलचस्प बात यह है कि हालांकि यह पूरी तरह से एक सहायक तर्क है, चिकित्सा साहित्य में अक्सर पाए जाने वाले कई शब्द ल्यूक-एक्ट्स में भी पाए जाते हैं। होबार्ट ने इस ओर इशारा किया था। कैडबरी ने बाद में ठीक ही बताया कि इनमें से कई शब्द गैर-चिकित्सा साहित्य में भी पाए जाते हैं, इसलिए यह वास्तव में किसी चिकित्सा लेखक के लिए मामला नहीं बनता है।

लेकिन जैसा कि कैडबरी ने बताया, और विद्वानों ने तब से कभी-कभी उपेक्षा की है, ठीक है, यह एक डॉक्टर के लेखक होने के अनुरूप है। कई शुरुआती विद्वान जिन्हें अब उद्धृत किया गया है, जैसे डेबेलियस और अन्य, कैडबरी, नकारात्मक के बजाय ल्यूक और लेखकत्व के प्रति बहुत सकारात्मक थे। इनमें से अधिकांश शब्द अन्यत्र भी पाए जाते हैं।

हार्नेक इसे नोट करता है इत्यादि। लेकिन आपके पास कुछ और हालिया अध्ययन हैं जिन्होंने ध्यान आकर्षित किया है, और वीस और लेडर और अन्य ने ध्यान आकर्षित किया है, ठीक है, यह एक चिकित्सा लेखक की संभावना के अनुरूप है। लेखकत्व।

परंपरा ल्यूक है। यदि यह ल्यूक द्वारा है, तो यदि यह ल्यूक द्वारा है जो पॉल के साथ था, कुलुस्सियों 4.14 के अनुसार, वह एक चिकित्सक था। तो, मैं सिर्फ चिकित्सकों के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं।

प्राचीन चिकित्सकों में कुछ अंधविश्वास था। कुछ वास्तविक अनुभवजन्य डेटा भी थे। यह सब एक साथ मिलाया गया था क्योंकि आपने स्पष्ट रूप से रोगियों पर अपने सभी प्रयोग नहीं किए थे।

आपके पास जो कुछ भी पारित किया गया था उसकी परंपराएं थीं, जिनमें से कुछ सटीक थीं, जिनमें से कुछ सटीक नहीं थीं। आपने बुजुर्गों का प्राकृतिक इतिहास बहुत पढ़ा है, और वह इसके या उसके कथित इलाज के बारे में बात कर रहे हैं। उनमें से कुछ हैं, आप जानते हैं, आप

एक गैडे की आंखों की पुतलियों को पीस देते हैं, आप जानते हैं, ये सभी अलग-अलग चीजें हैं जिन्हें कोई भी पकड़ नहीं पाएगा, और शायद कोई भी कभी कोशिश करने में कामयाब नहीं हुआ है।

लेकिन किसी भी मामले में, ऐसी चीजें भी थीं, वास्तविक टिप्पणियाँ जिनके बारे में लोगों ने मरीजों के साथ अपने अनुभव से किया था। उनमें से कुछ आपके पास सारोनिस के स्त्री रोग विज्ञान और गैलेन और हिप्पोक्रेटिक साहित्य इत्यादि में हैं। लेकिन उस समय चिकित्सा विचारधारा के विभिन्न स्कूल थे।

उनमें से एक को वास्तव में मेथोडिस्ट स्कूल कहा जाता था, जिसका आज के मेथोडिस्ट से कोई संबंध नहीं है, लेकिन विचार के कई अलग-अलग स्कूल और चिकित्सा के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। उनके पास MCATs नहीं थे। उनके पास मेडिकल स्कूल में प्रवेश के लिए कोई परीक्षा नहीं थी।

उनके पास मेडिकल स्कूल नहीं थे। आपको किसी अन्य चिकित्सक के अधीन प्रशिक्षु बनाया जाएगा। खैर, उनके पास कुछ स्थान थे जहां आप चिकित्सा प्रशिक्षण के लिए जा सकते थे, लेकिन कोई मान्यता नहीं थी।

तो, आप जानते हैं, कुछ चिकित्सक अच्छे हो सकते हैं और कुछ चिकित्सक बुरे हो सकते हैं। लेकिन किसी भी मामले में, इस बात पर सहमति है कि यह ल्यूक के सुसमाचार का वही लेखक है। और शैली एक शिक्षित शैली है।

यह अत्यधिक अलंकारिक नहीं है। यह अभिजात वर्ग के सदस्य से नहीं है। यह अधिक लोकप्रिय स्तर पर है, लेकिन यह उन बमुश्किल साक्षर लोगों से भी नहीं है, जिनके पास हम साधारण पपीरी, व्यावसायिक दस्तावेज़ लिखते हैं जिन्हें हम अक्सर लेखकों द्वारा निष्पादित पाते हैं।

कुछ लोग बमुश्किल अपने नाम पर हस्ताक्षर कर पाते थे। ल्यूक उस स्तर से कहीं आगे है। चार खंडों वाली टिप्पणी लिखने से पहले मेरी अपेक्षाओं के विपरीत, टिप्पणी लिखने से पहले, मैं सोच रहा था कि ल्यूक शायद पॉल की तुलना में उच्च अलंकारिक स्तर पर था।

लेकिन अधिनियमों के माध्यम से काम करने और पॉल के पत्रों के माध्यम से काम करने के बाद, मैंने विपरीत निष्कर्ष निकाला है। पॉल वास्तव में उच्च अलंकारिक स्तर पर काम करता है। आपको सामान्यतः पत्रों में ऐसा करने की आवश्यकता भी नहीं होती, लेकिन पॉल को ऐसा करना पड़ता है।

तब लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक में ऐसा करता है। फिर भी, ल्यूक एक शिक्षित व्यक्ति है। वह अशिक्षित नहीं है।

वह ल्यूक के सुसमाचार में मार्क के व्याकरण में नियमित रूप से सुधार करता है। यदि हम लेखक की पृष्ठभूमि को देखें, यह मानते हुए कि यह ल्यूक है, तो हम चिकित्सकों के बारे में कुछ जान सकते हैं, ठीक है, चिकित्सक उन व्यवसायों में से एक था जिसमें पुरुष और महिलाएं दोनों

शामिल थे। इसलिए, ल्यूक संभवतः अपने पेशेवर जीवन में कुशल महिलाओं के संपर्क में आया होगा, जो ल्यूक और एक्ट्स में हमने जो पढ़ा है, उसका अच्छा अर्थ है, जहां वह महिलाओं का सम्मान करता है।

वह अपने उस समय के अधिकांश समकालीनों, जिन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बारे में लिखा था, की तुलना में अधिक समावेशी हैं। प्रायः चिकित्सक गुलाम होते थे। आम तौर पर, वे यूनानी थे और आम तौर पर उनके पास कुछ शिक्षा होती थी।

हाँ, उस समय आपके पास शिक्षित दास हो सकते थे। दास संस्कृति कुछ अन्य परिवेशों से भिन्न थी। जिन कुछ घरों में दास थे, उनमें वास्तव में कुछ संपन्न घरेलू दास थे जो उच्च प्रशिक्षित थे।

कभी-कभी वे दास धारक आदि के लिए संपत्ति का प्रबंधन करते थे। कुछ यहूदी लोगों ने चिकित्सकों के प्रयोग का विरोध किया और कहा कि आपको केवल ईश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता है। लेकिन शहरी यूनानीकृत यहूदियों ने इसे स्वीकार कर लिया।

और इसलिए, ल्यूक को संभवतः अपने पेशे के कारण उन क्षेत्रों में अधिक पूर्वाग्रह का सामना नहीं करना पड़ा होगा जहां वह आमतौर पर जाता है, जो आम तौर पर शहरी होते हैं। उस समय कोई पेशेवर इतिहासकार नहीं थे। वह सामान्य नौकरी विवरण नहीं था।

चिकित्सक शिक्षित थे। पॉल कभी-कभी बीमार रहता था। निजी चिकित्सक आमतौर पर किसी के सबसे करीबी विश्वासपात्रों में से होते थे।

तो, यह समझ में आता है कि एक चिकित्सक ने पॉल के साथ यात्रा की होगी। लेकिन एक चिकित्सक इतिहासकार हो सकता है क्योंकि चिकित्सक शिक्षित था। एक विद्वान, प्रोफेसर लवडे अलेक्जेंडर ने तर्क दिया है कि ल्यूक की प्रस्तावना उस तरह से फिट बैठती है जिसकी आप एक वैज्ञानिक लेखक से अपेक्षा करते हैं।

इसलिए, ऐसा नहीं है कि ल्यूक एक इतिहासकार नहीं था, बल्कि यह कि ल्यूक अधिक आलंकारिक प्रकार के बजाय अधिक वैज्ञानिक प्रकार का था। लेकिन किसी भी मामले में, कोई पेशेवर इतिहासकार नहीं थे। वे वक्ता थे या कुछ और जिन्होंने इतिहास भी लिखा।

कुछ लोगों ने अपना बहुत सारा काम इतिहास लिखने में लगाया, लेकिन आम तौर पर, वे ऐसे लोग थे जिनके पास पर्याप्त धन या समर्थन था कि वे ऐसा कर सकते थे। ल्यूक पर आपत्ति. खैर, प्रमुख आपत्तियों में से एक पॉल के पत्रों से विवरण का अंतर है।

लेकिन इतिहासकारों के लिए विवरण में मतभेद की अनुमति तब तक थी जब तक उन्हें घटनाओं का सही पता चल गया। और जब आप अन्य इतिहासकारों की तुलना करते हैं क्योंकि उन्होंने पुरातनता के आंकड़ों और उन आंकड़ों के बारे में लिखा है जिनके बारे में उन्होंने रचना की है, तो आपकी वही स्थिति होती है जो एक्ट्स और पॉल के पत्रों के साथ होती है। आपके पास सिसरो के पत्र हैं।



फिर आपके पास ऐसे इतिहासकार हैं जिन्होंने सिसरो के बारे में लिखा। और स्थिति लगभग तुलनीय है जैसा कि कुछ क्लासिकिस्टों ने दिखाया है। लोगों ने कहा है, ठीक है, ल्यूक के पास क्षमाप्रार्थी एजेंडा है।

यह सच है। हालाँकि, पॉल भी ऐसा ही करता है। वे दोनों विशेष एजेंडे के साथ लिख रहे हैं।

इसलिए, विवरण में अंतर वास्तव में किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में चुनिंदा रूप से लिखने वाले इतिहासकार से हम जो अपेक्षा करेंगे उससे अधिक नहीं हैं। एक इतिहासकार जिसके अपने बिंदु हैं जिन पर वे ज़ोर देना चाहते हैं। इसका मतलब ये नहीं कि उन्होंने बातें बना लीं।

इसका मतलब यह है कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उन्हें अपने दर्शकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या लगा। मेरा मानना है कि ल्यूक पॉल के पत्रों की तुलना में बाद में लिख रहा है। तो, किसी भी मामले में, मुझे लगता है कि जो बात वास्तव में आश्चर्यजनक है, वह एक ऐसे व्यक्ति के लिए है जो शास्त्रीय पृष्ठभूमि से आता है या प्राचीन इतिहासलेखन से काम करता है, और मैंने प्राचीन इतिहासकारों को पढ़ा है, मैंने प्राचीन जीवनियाँ पढ़ी हैं, मैंने काम किया है ये प्राचीन स्रोत और प्राचीन पत्र भी, सिसरो के पत्र, सेनेका के पत्र, इत्यादि।

मेरे लिए जो बात चौंकाने वाली है वह है उनके बीच पत्राचार का स्तर। विशेष रूप से इस तथ्य को देखते हुए कि ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक को पॉल के अधिकांश पत्रों की जानकारी नहीं थी। वह उसके लिए कोई प्रमुख स्रोत नहीं था।

उसे एक प्रमुख स्रोत के रूप में इसकी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह पॉल को जानता था और वह उन चर्चों को जानता था जो पॉल को जानते थे। और इसलिए, उनके पास पत्रों की तुलना में अधिक प्रत्यक्ष जानकारी थी जिस पर भरोसा किया जा सकता था। उदाहरण के लिए, यदि आप कुरिन्थियों को लिखे पॉल के पत्रों पर भरोसा कर रहे थे, तो आप बहुत सी चीजें शामिल करेंगे जो अधिनियमों की पुस्तक आदि में गायब हैं।

धार्मिक मतभेद एक और आपत्ति है। और मैंने पहले इसका उल्लेख किया था। ल्यूक अधिक सामान्यीकरण कर रहा है, कम विशिष्ट है।

यह शैली का मामला है। और फिर, लोगों ने जो सबसे बड़े धार्मिक मतभेद बताए हैं, वे वास्तव में संभवतः मतभेद नहीं हैं। यह पॉल के पत्रों को गलत तरीके से पढ़ने का मामला है जो कुछ पीढ़ियों पहले किया जा रहा था।

अधिकांश अंतर जोर देने का विषय हैं। हमारे पास कुछ विवरण भिन्न हैं, लेकिन फिर भी, प्राचीन इतिहासलेखन के मानकों के अनुसार, ये बहुत छोटे हैं। लेखक की पृष्ठभूमि।

खैर, भूगोल से हम जो देख सकते हैं, वह ल्यूक एक्ट्स के भीतर भौगोलिक तत्व हैं। लेखक जानता है कि ईजियन क्षेत्र उस क्षेत्र की पूरी तरह से परवाह करता है, और चीजों की रिपोर्ट करना पसंद करता है। तो संभवतः उसके श्रोता उस क्षेत्र में या किसी भी स्थिति में उसके मुख्य दर्शकों में एकत्रित हो सकते हैं, ऐसा नहीं है कि वह अन्य पाठकों का स्वागत नहीं करेगा।

साथ ही, वह तटीय फ़िलिस्तीन को भी अच्छी तरह से जानते हैं। वह यहूदिया तट को जानता है, जो पॉल के एक यात्रा साथी के लिए उपयुक्त है। यहूदिया और गलील के अंदरूनी हिस्सों पर उनका भौगोलिक ज्ञान कमजोर होता जा रहा है, जो फिर से उन लोगों के लिए उपयुक्त होगा जिन्होंने पॉल के साथ उन क्षेत्रों में यात्रा की थी जिनके बारे में हम अधिनियम की पुस्तक में पढ़ते हैं।

आप जानते हैं, ल्यूक अध्याय नौ और उसके बाद, उसने यीशु के साथ यात्रा नहीं की। इसलिए, उन विवरणों को व्यवस्थित करना एक अलग मामला है। तो संभवतः लेखक एजियन क्षेत्र से है।

लेखक की पृष्ठभूमि यहूदी या गैर-यहूदी है। ठीक है, यदि वह कुलुस्सियों 4:14 का ल्यूक है, जो रोम में पॉल के साथ था, तो संभवतः उस अनुच्छेद के संदर्भ को देखते हुए वह एक अन्यजाति है। हालाँकि रोमियों 16 में एक ल्यूकस है जो यहूदी प्रतीत होता है, लेकिन यहूदी या अन्यजाति है।

ऐसा प्रतीत होता है कि वह सभी फिलिस्तीनी यहूदी रीति-रिवाजों, यहूदी और गैलीलियन रीति-रिवाजों से परिचित नहीं है। इसलिए, यदि वह यहूदी है, तो संभवतः वह एक प्रवासी यहूदी है। वह संभवतः यहूदिया और गलील के बाहर ग्रीक भाषी भूमध्यसागरीय यहूदी समुदाय से है।

लेकिन उन्होंने प्रेरितों के काम 20 और पॉल के पत्रों के बीच जो कुछ हम देखते हैं, उसके अनुसार उन्होंने यरूशलेम की यात्रा की, हमने इसे एक साथ रखा, और अन्यजातियों के चर्चों, प्रवासी चर्चों के प्रतिनिधियों के बीच यरूशलेम की यात्रा की, लेकिन अन्यजातियों ने इन भेंटों को लाया। तो शायद वह एक अन्यजाति था। वह सेप्टुआजेंट को आगे-पीछे जानता है।

इसलिए, यदि वह एक गैर-यहूदी है, तो संभवतः वह एक ईश्वर-भयभीत व्यक्ति था, जिसने यीशु को मसीहा के रूप में विश्वास करने से पहले आराधनालयों में समय बिताया था। हालाँकि यह संभव है कि उसने बाद में बहुत कुछ सीखा हो। मैं नास्तिकता से परिवर्तित हो गया था।

मेरी कोई चर्च पृष्ठभूमि नहीं थी। मुझे लगता है कि मैं एक बार कैथोलिक चर्च गया था, लेकिन मेरी कोई वास्तविक चर्च पृष्ठभूमि नहीं थी। और ईसाईयों के विश्वास के बारे में मेरी जानकारी वास्तव में सीमित थी।

मैं जानता था कि वे ट्रिनिटी और गार्गोयल्स में विश्वास करते थे। वे ईसाई धर्म के बारे में बहुत अधिक नहीं जानते थे। लेकिन, आप जानते हैं, और मैंने जो कुछ सीखा है, आप जानते हैं, बड़े समाज से, जिसके बारे में मैंने सुना था।

लेकिन मेरे रूपांतरण के बाद, मुझे रटना शुरू करना पड़ा क्योंकि संडे स्कूल के छोटे बच्चे बाइबल के बारे में मुझसे अधिक जानते थे। इसलिए, मैंने प्रतिदिन बाइबल के 40 अध्याय पढ़ना शुरू कर दिया। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप हर महीने बाइबल या हर हफ्ते नया नियम पढ़ सकते हैं।

और आखिरकार मैंने पकड़ लिया। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक में ईश्वर से डरने वालों की बहुत रुचि है। और इसलिए, यह प्रशंसनीय है कि ल्यूक ईश्वर-भयभीत हो सकता था।

और कई विद्वान सोचते हैं कि उनके लक्षित दर्शकों के लिए भी यही बात है। हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वह यहूदी था या अन्यजाति। लेकिन मैं यह सोचने में प्रवृत्त हूँ कि वह शायद एक अन्यजाति था।

और क्योंकि मुझे लगता है कि वह संभवतः कुलुस्सियों 4:14 का ल्यूक है। उनके लक्षित दर्शक। खैर, आज हम आम तौर पर मानते हैं कि इनमें से कई प्रमुख मूलभूत कार्य, आप जानते हैं, ये ऐसे कार्य नहीं थे जिन्हें आप अपने सिर के ऊपर से लिखेंगे। आज की मुद्रा में अधिनियमों की पुस्तक की तरह, इसे तैयार करने में पपीरी और मुंशी इत्यादि के बीच हजारों डॉलर खर्च होंगे।

प्राचीन मानकों के अनुसार ये प्रमुख कार्य थे। तो, यह किसी के सिर के ऊपर से नहीं लिखा गया था। ल्यूक संभवतः उतने ही व्यापक दर्शक वर्ग को महत्व देगा जितना उसे मिल सकता है।

और रिचर्ड बाउकॉम और अन्य ने दिखाया है कि संभवतः गॉस्पेल जैसे कार्यों को व्यापक दर्शकों की आवश्यकता होती है, जबकि कभी-कभी आलोचकों ने सोचा था कि वे एक विशेष स्थानीय समुदाय पर ध्यान केंद्रित करते हैं। साथ ही, इसे बहुत दूर तक भी ले जाया जा सकता है क्योंकि आम तौर पर लोगों के पास एक लक्षित दर्शक वर्ग होता है। उनके मन में एक मुख्य दर्शक वर्ग है।

उनकी कुछ अपेक्षाएँ होती हैं, कुछ लोग होते हैं कि वे इस संदेश को विशेष रूप से प्राप्त करने की कल्पना करते हैं या यह मान लेते हैं कि इस संदेश को विशेष रूप से कौन सुनेगा। यह दिलचस्प है कि भले ही यह पुस्तक थियोफिलस को समर्पित है, इसलिए सबसे उत्कृष्ट थियोफिलस उच्च पद और प्रतिष्ठा का व्यक्ति है। ल्यूक अधिनियम, और विशेष रूप से पहला खंड, ल्यूक के सुसमाचार की पुस्तक, नए नियम में सबसे मजबूत स्थानों में से एक है जो अमीरों को चुनौती देता है और कहता है कि हमें गरीबों की सेवा के लिए अपने सभी संसाधनों का उपयोग करने की आवश्यकता है।

उसी समय, ल्यूक एक काफी शिक्षित, संपन्न दर्शकों की कल्पना करता है, न कि कुलीन वर्ग की। संभ्रांत दर्शक बहु-मात्रा वाले ऐतिहासिक कार्यों का खर्च उठा सकते हैं, हालाँकि ल्यूक मानवता का संपूर्ण इतिहास लिखने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। वह सिर्फ चर्च के मिशन का इतिहास लिख रहा है।

लेकिन वह बहुत सी ऐसी बातें छोड़ देता है जिन्हें हम जानना चाहेंगे। ऐसा लगता है कि ल्यूक के दर्शक बहुत सारे नामों से परिचित हैं। वह विशेष रूप से एजियन क्षेत्र में, लेकिन अन्यत्र भी, व्यापक भौगोलिक ज्ञान को हल्के में लेता है।

उन्होंने यह पुस्तक सबसे उत्कृष्ट थियोफिलस, थियोफिलस को समर्पित की। अब कुछ लोगों ने थियोफिलस को प्रेरितों की पुस्तक का आदर्श पाठक बताया है। समर्पित व्यक्ति आम तौर पर केवल किसी का मुख्य श्रोता नहीं होता।

कोई व्यक्ति अक्सर किसी धनी संरक्षक या प्रायोजक या किसी ऐसे व्यक्ति को पुस्तक समर्पित करता है जिससे आपको आशा होती है कि वह पुस्तक पसंद आएगी और इसलिए वह अच्छा प्रसार प्रदान करेगी। इसलिए थियोफिलस मुख्य दर्शकों की तरह नहीं था, लेकिन थियोफिलस दर्शकों का हिस्सा था। और ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक शिक्षा के मामले में मार्क की तुलना में उच्च स्तर का, अधिक परिष्कृत श्रोता वर्ग मानता है।

और शायद मैथ्यू या जॉन की तुलना में हेलेनिस्टिक डायस्पोरा के संदर्भ में। ल्यूक की शैली ग्रीक साहित्यिक गद्य शैली और ग्रीक के बीच भिन्न होती है जो ग्रीक की एक प्रकार की बोली सेप्टुआजेंट से काफी प्रभावित है। कुछ लोगों ने इसे यहूदी यूनानी कहा है।

दूसरों ने बताया है, ठीक है, यह सिर्फ सामान्य कोइन है। उस काल का यहूदी यूनानी बिल्कुल साधारण कोइन था। लेकिन साधारण कोइन बिल्कुल ग्रीक साहित्यिक गद्य शैली नहीं है।

तो, ल्यूक उन दोनों के बीच भिन्न-भिन्न प्रकार का है। और ऐसे स्थान हैं जहां वह स्पष्ट रूप से सेप्टुआजेंट या सेप्टुआजेंट की शैली को प्रतिध्वनित कर रहा है, खासकर जब वह ल्यूक अध्याय एक और दो जैसे पारंपरिक दृश्यों को दोहरा रहा है। और कुछ ने वहां और अधिनियमों के पहले 15 अध्यायों में बहुत से यहूदीवाद भी पाया है।

मेरी सोच यह है कि यह शायद या तो उसके स्रोतों को प्रतिध्वनित कर रहा है या यह सिर्फ सेप्टुआजेंट की शैली को प्रतिध्वनित कर रहा है जिसमें ल्यूक स्पष्ट रूप से डूबा हुआ था। और जाहिर तौर पर उनके स्रोत उसी में डूबे हुए थे। और उन अनुभागों के कई स्रोत द्विभाषी रहे होंगे।

अरामाइक भाषी और यूनानी भाषी। और इसलिए, आपके पास कुछ मुहावरे भी हो सकते हैं जो आगे भी चलते हैं। मेरी पत्नी कांगो से है और वह पाँच भाषाएँ बोलती है।

और कभी-कभी एक भाषा के मुहावरे दूसरी भाषा में चले जाते हैं। अधिनियमों का फोकस. यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय के विपरीत, भौगोलिक फोकस अक्सर शहरी केंद्रों पर होता है, जो अक्सर ग्रामीण गलील में होता था।

अधिनियमों की पुस्तक अक्सर शहरी केंद्रों में होती है। ल्यूक अक्सर संभ्रांत लोगों के रूपांतरण की रिपोर्ट करते हैं, हालाँकि केवल संभ्रांत वर्ग ही इसमें रुचि नहीं रखते थे। यदि आप एक हाशिये पर पड़े बाहरी समूह से हैं जिसे समाज में अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता है, तो यहां-वहां कुछ लोगों का हवाला देना आपके लिए फायदेमंद है।

खैर, देखिए, हमारे पास कुछ प्रोफेसर हैं या हमारे पास कुछ अमीर लोग हैं या कुछ और भी। इसलिए हमें तुच्छ मत समझो. लेकिन किसी भी स्थिति में, प्रारंभिक ईसाई आंदोलन एक अल्पसंख्यक आंदोलन था।

इसे हाशिये पर डाल दिया गया. और इसलिए, उन्होंने इसकी सराहना की होगी। लेकिन वह अक्सर अभिजात वर्ग के धर्मांतरण का उल्लेख करता है, हालांकि वह गरीबों के लिए भगवान की चिंता दिखाने में भी काफी रुचि रखता है।

अधिनियमों की पुस्तक में जिन भौगोलिक क्षेत्रों पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया है, एक बार जब यह यहूदिया से बाहर चला जाता है, जहां से इसकी शुरुआत हुई, ग्रीस, मैसेडोनिया, हेलेनिस्टिक एशिया, जो मुख्य रूप से एशिया माइनर के ग्रीक भाषी क्षेत्र हैं, हालांकि इसमें कुछ अन्य भी शामिल हैं, और अंततः रोम तक, जो उस साम्राज्य का हृदय था जिसमें ल्यूक के श्रोता रहते थे। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ल्यूक को इसकी परवाह है क्योंकि वह जानता है कि उसके दर्शक विशेष रूप से इसके बारे में परवाह करेंगे, बजाय इसके कि मिशन को कहीं और खोजा जाए, जहां सुसमाचार भी पहुंचा। वह फिलिप्पी में सबसे अधिक विस्तृत है, और यह समझ में आया यदि लेखक वास्तव में लंबे समय तक फिलिप्पी में रहे, जैसा कि Wii कथा से पता चलता है।

जब वह दर्शकों के बारे में सोच रहा होता है, तो ठीक है, वह जानता है कि फिलिप्पी के विश्वासियों को इस काम में दिलचस्पी होगी। और वे, कम से कम उसके दिमाग के पीछे, मुख्य मुख्य श्रोता के रूप में हो सकते हैं। अच्छा, दर्शक यहूदी थे या अन्यजाति? गैर-यहूदी ईसाइयों को अभी भी व्यापक रूप से यहूदी धर्म में परिवर्तित होने के रूप में देखा जाता था।

और गैर-यहूदियों के धर्म परिवर्तन पर जोर था, किसी ठोस मिशन आंदोलन पर नहीं, बल्कि धर्मांतरण कराने को महत्व दिया गया था। जेरूसलम चर्च को अभी भी आधिकारिक माना जाता था। इसलिए कुछ चीजें वहां तय की जानी थीं, जैसे अधिनियम 15 में।

ल्यूक पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद, सेप्टुआजेंट का एक मजबूत ज्ञान मानते हैं। मुझे इस अवधि में पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद का मानक, सबसे सामान्य रूप कहना चाहिए। तो संभवतः उनका मुख्य श्रोता वह श्रोता है जो धर्मशास्त्र का बहुत जानकार है।

इसका मतलब यह नहीं कि वे यहूदी हैं। यह तर्क दिया गया है और इसके लिए कुछ अच्छे तर्क सामने रखे गए हैं। लेकिन मुझे अभी भी लगता है कि अधिकांश विद्वानों के साथ, ये मसीहा में इस यहूदी विश्वास में परिवर्तित होने वाले गैर-यहूदी हो सकते हैं।

दरअसल, प्रवासी मण्डलियाँ मिश्रित थीं, इसलिए यहूदी और गैर-यहूदी, लेकिन शायद चर्च तक। अब हमें तारीख के बारे में सवाल पूछने की जरूरत है. कुछ लोगों ने शीघ्र तिथि के लिए तर्क दिया है।

मेरा मतलब है, कोई भी स्पष्ट रूप से अधिनियमों की पुस्तक के अंत से पहले की तारीख के लिए बहस नहीं करता है। तो, वर्ष 62 के आसपास से पहले कोई भी किसी चीज़ के लिए बहस नहीं करता है। लेकिन पिछली तारीख वह तारीख है जिसके बारे में तर्क दिया गया है, ठीक है, यह पॉल के साथी द्वारा लिखा गया है।

पॉल के कई कनिष्ठ साथी थे, लेकिन पॉल वर्ष 64 के आसपास कहीं शहीद हो गए। कुछ की मृत्यु 67 वर्ष की आयु में हुई, लेकिन नीरो के उत्पीड़न के तहत, जो वर्ष 64 में शुरू हुआ। यदि ल्यूक पॉल से केवल एक दशक तक जीवित रहा, तो यह उसे आगे बढ़ा देगा। पहली सदी के मध्य 70 के दशक में।

पिछली तारीख के पक्ष में सबसे मजबूत तर्क यह दिया गया है कि एक्ट्स पॉल की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है। लेकिन ध्यान रखें कि एक्ट्स, एक्ट्स का फोकस स्वयं एक जीवनी नहीं है। अधिनियम मिशन पर केंद्रित है।

कुछ लोगों ने अधिनियमों में जीवनी संबंधी तत्वों को नोट किया है, और मैं उन्हें स्वीकार करता हूँ। लेकिन यह एक अकेले व्यक्ति पर पूरा काम नहीं है। प्रेरितों के काम अध्याय नौ तक पॉल का उल्लेख तक नहीं किया गया है।

इसलिए भले ही मैं अधिनियमों में जीवनी संबंधी तत्व देखता हूँ, यह स्वयं एक जीवनी नहीं है। यह प्रारंभिक ईसाई मिशन के बारे में बात कर रहा है, और इसलिए इसका पॉल की मृत्यु के साथ समाप्त होना जरूरी नहीं है। वास्तव में, ल्यूक सकारात्मक कानूनी मिसालों पर जोर देकर बहुत खुश दिखता है।

और पॉल की फाँसी इतनी सकारात्मक मिसाल नहीं होगी। यह किताब के लिए सकारात्मक बदलाव के बजाय एक दुखद अंत होगा। ल्यूक को सकारात्मक नोट्स पर समाप्त करना पसंद है।

वह ल्यूक के सुसमाचार को निश्चित रूप से एक सकारात्मक नोट पर समाप्त करता है। और वह प्रेरितों के काम की पुस्तक को भी इसी प्रकार से समाप्त करता है। खैर, प्रारंभिक तिथि के लिए एक और तर्क यह है कि रोम पर यहूदी प्रभाव जो आप अधिनियमों में देखते हैं वह केवल वर्ष 70 से पहले था।

तो, यह वर्ष 70 से पहले लिखा गया होगा। मुझे लगता है कि यह तर्क बहुत अच्छा नहीं है क्योंकि यहूदियों का प्रभाव एशिया माइनर जैसी कुछ जगहों पर, उससे कहीं आगे तक जारी रहा। प्रकाशितवाक्य अध्याय दो और तीन भी यही सुझाव देते हैं।

तो, 70 और 90 के बीच की बाद की तारीख के बारे में बात करते हुए, अधिकांश विद्वान यहीं आते हैं। दूसरा अग्रणी समूह 60 के दशक का वह समूह है जिसका हमने अभी उल्लेख किया है। लेकिन अधिकांश विद्वान ल्यूक को 70 या 80 के दशक का मानते हैं।

उसके कुछ कारण यहां दिए गए हैं। ल्यूक अध्याय 21 ऐसा लगता है जैसे यह 70 के बाद लिखा गया था। यह भाषा को समायोजित करता है।

मार्क 13 में, ऐसा लगता है कि यीशु उसी समय वापस आ सकते हैं जब मंदिर नष्ट हो गया है। मैथ्यू अध्याय 24 शिष्यों के प्रश्नों की प्रकृति को स्पष्ट करके कुछ हद तक इसे योग्य बनाता है। तो, ये वास्तव में दो प्रश्न हैं।

ये चीजें कब होंगी? एक तरफ कब टूटेगा मंदिर? और दूसरी ओर युग के अन्त में तेरे आने का क्या चिन्ह होगा? ठीक है, ल्यूक इसे इसलिए भी स्पष्ट करता है ताकि जब आप यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखते हैं तो वह उजाड़ने वाले अपवित्रीकरण का उल्लेख करता है। और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह वहां 70 के बारे में बात कर रहा है क्योंकि वह रोम द्वारा सभी राष्ट्रों के बीच लोगों को बंदी के रूप में, गुलाम के रूप में ले जाने के बारे में बात करता है। और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए तब तक यरूशलेम अन्यजातियों से रौंदा जाता रहेगा।

और फिर वह प्रभु के आगमन के बारे में बात करता है। आप ऊपर देखेंगे, आपकी मुक्ति निकट आ रही है। बहुत से लोग सोचते हैं कि यह स्पष्टीकरण, ल्यूक इस तथ्य के बाद, वर्ष 70 के बाद इसे और अधिक स्पष्ट कर रहा है।

यरूशलेम के विनाश को बेबीलोन के नमूने के माध्यम से देखना 70 के बाद बहुत आम था। हालाँकि रोम को एक नए बेबीलोन के रूप में देखना वास्तव में उससे भी पहले था। इसके अलावा, कथानक के विकास में 70 में जो हुआ उसकी कुछ प्रतिध्वनियाँ भी प्रतीत होती हैं।

मेरा मतलब है, ल्यूक अध्याय 19 और अन्य जगहों पर यीशु यरूशलेम से विनती कर रहा है कि अभी भी समय है, वह मुड़ जाए। लेकिन अधिनियमों की पुस्तक में, हमारे पास वह भी है। और प्रेरितों के काम अध्याय 21 और 22 में, प्रेरितों के काम अध्याय 22 में पॉल के भाषण को यरूशलेमवासियों, राष्ट्रवादी यरूशलेमवासियों के लिए एक अंतिम दलील के रूप में देखा जा सकता है।

अन्यजातियों के खिलाफ हिंसा का रास्ता नहीं चुनना, बल्कि शांति के लिए खुला रहना। भले ही यह गैर-यहूदी ही थे जो इसे भड़का रहे थे, राष्ट्रवादी उग्रवादी प्रतिरोध के कारण अंततः एक भयानक त्रासदी हुई और यरूशलेम का विनाश हुआ। और पाठ पर काम करने के बाद मुझे ऐसा लगता है मानो ल्यूक उस प्रकार की घटनाओं पर प्रतिक्रिया दे रहा हो।

कुछ लोग कहते हैं, अच्छा, यरूशलेम के विनाश का वर्णन क्यों नहीं किया जाता? ठीक है, आप जानते हैं, यदि आप 1910 में किसी चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं और आप इसे प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1930 में लिख रहे हैं, तो आप आवश्यक रूप से प्रथम विश्व युद्ध का उल्लेख नहीं करेंगे क्योंकि आपकी कथा 1910 में समाप्त होती है। यह विश्व युद्ध से पहले समाप्त हो गई थी मुझे हुआ। और इसी तरह, उसे इसे घटित होने के रूप में बताने की ज़रूरत नहीं है।

वह इसे भविष्यवाणी के अनुरूप घटित होने के रूप में वर्णित करता है। और हम कथा के भीतर से जानते हैं कि यीशु की भविष्यवाणियाँ सच होती हैं, जैसे दूसरा आगमन सच होगा। तो, एक यात्रा साथी अभी भी 70 और 90 के दशक में फिट हो सकता है।

फिर, उनके अधिकांश यात्रा साथी शायद उनसे उम्र में छोटे थे। बरनबास और सिलास को छोड़कर, जो सहकर्मी प्रतीत होते थे, वे कनिष्ठ यात्रा साथी थे। 70 से 90 के तर्क में एक और मुद्दा यह है कि ल्यूक ने मार्क को एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया।

यह बिल्कुल स्पष्ट है. वह मार्क के व्याकरण को साफ़ करता है। मार्क ल्यूक को नहीं लेंगे और तब अधिक सड़क-स्तरीय व्याकरण का उपयोग नहीं करेंगे जब लोग वास्तव में उच्च स्तर के व्याकरण का सम्मान करते थे, जो उस दिन व्याकरणिक रूप से उच्च माना जाता था।

ल्यूक ने मार्क को एक स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया। और हम जानते हैं कि ल्यूक ने स्रोतों का उपयोग किया था। वह हमें ल्यूक अध्याय एक में वह बिंदु रिक्त बताता है।

मार्क को वर्ष 64 के आसपास लिखा गया होगा। विद्वान आमतौर पर मार्क को 64 और 75 के बीच की तारीख देते हैं। मैं मार्क के लिए पहले की तारीख का समर्थन करता हूँ।

दरअसल, हम नहीं जानते. यह संभव है कि मार्क उससे बहुत पहले लिखा गया हो। यह 40 के दशक में लिखा जा सकता था, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है।

लेकिन शायद पापियास से हमें जो कुछ मिला है, अगर मार्क को ये चीजें पीटर से मिलीं, तो शायद उसे पीटर से तब मिलीं जब वह रोम में उसके साथ था। और ऐसा होने पर, 60 के दशक की तारीख, पीटर की शहादत से पहले, शायद 64 के आसपास, मार्क के लिए समझ में आती है। हालाँकि मार्क सामग्री मिलने के बाद प्रकाशित कर सकते थे।

लेकिन किसी भी स्थिति में, यदि हम 60 के दशक की कोई तारीख लेते हैं, तो हमें मार्क के प्रचलन में होने के लिए इतना समय छोड़ना होगा कि ल्यूक इसे एक उपलब्ध स्रोत के रूप में प्राप्त कर सके। तो, 70 के बाद कुछ समय समझ में आता है। अब, कुछ लोगों ने बहुत देर की तारीख के लिए तर्क दिया है।

कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि जोसीफस पर निर्भरता पर आधारित है क्योंकि जोसीफस ने कुछ चीजों का भी उल्लेख किया है जो हमारे पास अधिनियमों में हैं। लेकिन मैं इसे इस तरह देखता हूँ. यदि जोसीफस केवल उन घटनाओं को नहीं बना रहा है जिनका वह वर्णन करता है, तो ये ऐसी घटनाएँ थीं जो पहले से ही ज्ञात थीं और जोसीफस के अलावा अन्य लोग भी उनके बारे में जान सकते थे।

आपको उनके बारे में लिखने के लिए, उनके बारे में जानने के लिए जोसीफस का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं थी। इसके अलावा, वह स्थान जहां वह यहूदा, गैलीलियन और थुटिस के संदर्भ में जोसीफस के साथ सबसे अधिक मेल खाता है, वह जोसीफस का खंडन करता है, जिससे ऐसा नहीं लगता कि वह उस बिंदु पर जोसीफस पर निर्भर है।

अब, कुछ ने डेट किया है, ये मुख्य रूप से वे लोग हैं जिनके बारे में मैं यहां बात कर रहा हूँ, जिन्होंने 90 के दशक में एक्ट्स को डेट किया था। विद्वानों की संख्या में से, यदि आप एक सर्वेक्षण लेते हैं, और यह प्रवाह में है, तो मैं यह सर्वेक्षण वास्तव में जानकारी के आधार पर ले रहा हूँ, विशेष रूप से किसी ऐसे व्यक्ति से जो इसे दूसरी शताब्दी में बताता है। बहुमत के विचार क्या थे, उनके सर्वेक्षण के अनुसार, जो शायद 10 साल पहले किया गया था, जब मैं बोल रहा हूँ, तब से बहुमत का दृष्टिकोण 70 और 90 के बीच था। दूसरा प्रमुख दृष्टिकोण 60 के दशक में था।



तीसरा प्रमुख दृश्य 90 के दशक का था।

और सबसे कम दृश्य दूसरी शताब्दी में था। अब, उस पर विशेष रूप से लिखने वाले दो विद्वानों के कारण दूसरी शताब्दी का दृष्टिकोण बढ़ गया है।

रिचर्ड पेरवोट और जोसेफ टायसन। टायसन ने इसे रिचर्ड पेर्वो की तुलना में बाद का बताया है, और उनका मानना है कि यह दूसरी शताब्दी में मार्सियोन से संबंधित है। ऐसे बहुत से विद्वान नहीं हैं जो इतनी दूर तक जाते हैं, खासकर इसलिए क्योंकि आप वास्तव में ल्यूक और एक्ट्स को इतना अलग नहीं कर सकते हैं।

रिचर्ड पेर्वो उन्हें अलग करते हैं, हालाँकि वह एक सामान्य लेखक को स्वीकार करते हैं। लेकिन हम में से उन लोगों के लिए जो सोचते हैं कि यह ल्यूक-एक्ट्स है कि उन्हें एक साथ पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि विशेष रूप से एक्ट्स 1:1 पिछले खंड को संदर्भित करता है, मूल रूप से जिस तरह से एक इतिहासकार दूसरा खंड लिखेगा, जिसका उल्लेख करके शुरू किया जाएगा। पिछला वॉल्यूम. यदि ल्यूक और अधिनियमों को एक साथ बांधा गया है, तो आप ल्यूक के सुसमाचार की तुलना में अधिनियमों को कई दशकों बाद की तारीख नहीं दे सकते।

और हमारे पास ल्यूक के सुसमाचार को पहली शताब्दी का बताने के कारण हैं। और साथ ही, क्योंकि मैं पॉल के एक यात्रा साथी के लिए तर्क देता हूँ, जो फिर से, उस दृष्टिकोण के विरोधियों ने भी स्वीकार किया है कि यह बहुसंख्यक दृष्टिकोण है। इसलिए, मुझे लगता है कि बहुत देर की तारीख कई कमजोरियों से ग्रस्त है।

निश्चित रूप से, यदि यह पॉल का यात्रा साथी था, तो आप इसे मार्सियोन के समय में नहीं बता सकते। अब, मेरे पास काफी पहले की तारीख पर बहस करने का एक और कारण है। और यह कारण कुछ ऐसा है जिस पर मैं पुस्तक के उद्देश्य के संदर्भ में तर्क देता हूँ, जिस पर मैं बाद में और अधिक विस्तार से आऊंगा।

लेकिन मैं विश्वास करता हूँ, और जब मैंने एक्ट्स पर अपनी टिप्पणी पर काम करना शुरू किया तो मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ, मुझे इस दृष्टिकोण के बारे में पता था, लेकिन मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। लेकिन अधिनियमों पर काम करने के बाद, मैंने इस दृष्टिकोण को अपनाया क्योंकि मेरे लिए यह स्पष्ट था कि अधिनियमों की अंतिम तिमाही में पॉल कैद में है। ल्यूक उसके साथ है।

यह ल्यूक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यही एक कारण है कि यह अनुभाग इतना विस्तृत है। लेकिन आप जानते हैं, आपके पास अन्य अनुभागों में मौजूद कुछ विशेषताएं नहीं हैं।

आपके पास बहुत अधिक चिन्ह और चमत्कार नहीं हैं, हालाँकि वे आपके सामने आते रहते हैं। अधिकांश भाषण रक्षा भाषण और क्षमाप्रार्थी भाषण हैं। और आप कहते हैं, अच्छा, इसका उद्देश्य क्या है? ल्यूक का संपूर्ण सुसमाचार और संपूर्ण अधिनियमों में क्षमाप्रार्थी एजेंडा है।

अपने पहले खंड में, यह दर्शाता है कि यीशु किसी भी आरोप में निर्दोष थे, जिससे रोमन साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करने वाले किसी व्यक्ति के रूप में उन्हें रोमन साम्राज्य के खिलाफ गद्दार के रूप में निंदा की जा सकती थी। यीशु इस मामले में निर्दोष था। संभवतः, चूंकि वह विश्वासियों को लिख रहा है, संभवतः उनमें से अधिकांश उससे इस पर सहमत हैं।

कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि अधिनियमों को कानूनी संक्षिप्त विवरण की तरह लिखा जाता है। यह वास्तव में एक कानूनी संक्षिप्त विवरण की तरह नहीं लिखा गया है, लेकिन इसमें उस तरह के मुद्दे शामिल हैं जो एक कानूनी संक्षिप्त विवरण में सामने आए होंगे, जो इस तरह एक पूर्ण विवरण नहीं होगा। लेकिन यदि आप प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ेंगे, तो आप जानते हैं, प्रेरितों के काम की पुस्तक का एक-चौथाई भाग पॉल हिरासत में है, पॉल हिरासत में अपना बचाव कर रहा है।

और पॉल के खिलाफ जो आरोप सबसे अधिक नुकसानदेह हैं, जिसके लिए कुछ सबूत जुटाए जा सकते हैं, वह यह है कि पॉल ने दंगे भड़काए थे। यह राजद्रोह का आरोप है, अधिनियम 24 श्लोक 5। और आप अधिनियम के बाकी हिस्सों को देखें और ल्यूक उन कई स्थानों पर दंगों का उल्लेख करता है जहां पॉल ने सेवा की थी। अब, यदि आप उस आरोप के विरुद्ध पॉल का बचाव कर रहे हैं, तो आप दंगों का उल्लेख क्यों करने जा रहे हैं? खैर, संभवतः उसे ऐसा करना पड़ा क्योंकि दंगों के बारे में पता था।

तो, ल्यूक जो करता है वह दिखाता है कि पॉल ने दंगे नहीं भड़काए। और आप पॉल के पत्र पढ़ते हैं, वह उस तरह का व्यक्ति नहीं है जिसने दंगे भड़काए होंगे। वह उनका एजेंडा नहीं था।

लेकिन जाहिर तौर पर लोगों ने उन पर ये आरोप लगाया था। और ल्यूक दिखाता है कि नहीं, यह पॉल नहीं है। यह उन पर आरोप लगाने वाले ही लोग हैं, जो पॉल को मुसीबत में डालना चाहते थे, जो दंगे भड़काने के दोषी थे।

अब, यह दिलचस्प है क्योंकि यह प्राचीन काल में अपने आरोप लगाने वालों के खिलाफ आरोपों को पलटने के लिए एक सामान्य रक्षा तकनीक थी। अब, पॉल की मृत्यु के दशकों बाद यह एक मुद्दा क्यों होगा? मेरा मानना है कि यह ऐसे समय में सबसे अधिक प्रासंगिक होगा जब पॉल के खिलाफ आरोप अभी भी ताजा थे। यह 60 के दशक की किसी तारीख के लिए काम करेगा, जिसके लिए मैं बहस नहीं कर रहा हूं।

लेकिन यदि आप यह तर्क देना चाहते हैं कि पॉल अभी भी जीवित है, तो आप जानते हैं, जाहिर तौर पर उसे तब बचाव की आवश्यकता होगी। लेकिन संभवतः उसे पूर्ण कथा के बजाय रक्षा संक्षिप्त के रूप में इसकी अधिक आवश्यकता होगी जैसा कि हमारे पास ल्यूक-एक्ट्स में है। लेकिन पॉल की मृत्यु के तुरंत बाद, आरोप अभी भी ताजा हैं।

ये आरोप न केवल पॉल पर प्रतिबिंबित होते हैं, बल्कि वे प्रवासी चर्चों पर भी प्रतिबिंबित होते हैं क्योंकि पॉल को गैर-यहूदी मिशन का नेता माना जाता था। और इसलिए, आप जानते हैं, यदि

पॉल की निंदा की जाती है, तो पॉल पर अपराधी होने का आरोप लगाया जाता है, जो सभी चर्चों के लिए बुरा लगता है। आपने इसे नये नियम के अक्षरों में पढ़ा है।

2 तीमुथियुस में, यह इस बारे में बोलता है, आप जानते हैं, यह व्यक्ति मेरी जंजीरों से शर्मिंदा नहीं था। फिलिप्पियों अध्याय 1 उन लोगों के बारे में बात करता है जो जेल में पॉल को परेशान करना चाहते थे, लेकिन सुसमाचार की रक्षा के लिए पॉल पर मुकदमा चलाया जा रहा था। तो, ऐसा लगता है कि पॉल की विरासत और प्रवासी मिशन की विरासत एक साथ जुड़ी हुई थी।

कुछ लोग ऐसे भी थे जो पॉल की कैद के कारण उससे अलग होना चाहते थे। उसकी फांसी की वजह से. लेकिन ल्यूक अपने समानांतर संस्करणों में यह सुझाव दे सकता है कि जैसे यीशु निर्दोष था, वैसे ही पॉल भी निर्दोष था।

दोनों ही मामलों में यह राजनीतिक कारणों से न्याय का भ्रष्टाचार था। और इसलिए हमें खुद को पॉल से अलग नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें यह पहचानना चाहिए कि उसने जो किया वह अच्छा था। यदि ऐसा है, तो संभवतः यह उस समय लिखा गया है जब पॉल की विरासत पर अभी भी विवाद चल रहा था।

शायद उस समय के आसपास नहीं जब 1 क्लेमेंट 90 के दशक में लिखा गया था, लेकिन शायद 70 या संभवतः 80 के दशक में। इसलिए, मैं 70 के दशक की एक तारीख के लिए बहस करूंगा। अब इनमें से कोई भी तारीख निश्चित नहीं है।

इसलिए, मैं आपको सिर्फ यह तर्क दे रहा हूँ कि मुझे क्यों लगता है कि कुछ चीजें दूसरों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। 60 का दशक संभव है. 80 का दशक संभव है.

मुझे लगता है कि 90 का दशक इसे आगे बढ़ा रहा है। मुझे नहीं लगता कि दूसरी शताब्दी की संभावना है। मुझे लगता है कि 70 के दशक की तारीखें सबसे अधिक संभावित हैं।

और, आप जानते हैं, कई इंजील विद्वान, जिनमें से मैं भी एक हूँ, 70 के दशक के हैं। कुछ लोगों ने कहा है कि इंजील विद्वान 60 के दशक के हैं। खैर, कुछ लोग ऐसा करते हैं।

कुछ लोग इसे बाद की तारीख देते हैं। बेन व्हिटिंगटन ने इसे मुझसे थोड़ा बाद में बताया है। लेकिन एफएफ ब्रूस, जिन्होंने अपने एक्स कमेंटरी के तीसरे संस्करण में विशेष रूप से ठोस रूप से 70 से पहले की तारीख के लिए तर्क दिया था, ने अपना विचार 70 के बाद की तारीख में बदल दिया।

तो, मैं यह सिर्फ इसलिए कह रहा हूँ ताकि आपमें से जिन लोगों ने सुना है कि हर किसी को इसकी तारीख 60 के दशक में रखनी चाहिए, बस आपको बता दूँ। मेरे पास इसके बाद डेटिंग करने वाली कंपनी है। किसी भी स्थिति में, जब भी आप इसे दिनांकित करते हैं, तो शैली इतिहास की शैली होती है।

सारा इतिहास एक उद्देश्य से लिखा गया था। इतिहास मनोरंजक हो सकता है, लेकिन उसे ज्ञानवर्धक भी होना चाहिए। इतिहास, कम से कम यदि यह अभिजात वर्ग के लिए लिखा गया था, तो इसमें अलंकारिक कलात्मकता दिखाने की आवश्यकता थी।

और ल्यूक के पास उसमें से कुछ है, हालाँकि उस तरह का नहीं जैसा आप विशिष्ट कार्यों में पाते हैं। इसलिए, लोगों ने इसे मनोरंजक बनाने के लिए लिखा ताकि आपको इसे पढ़ने में आनंद आए, लेकिन यह जानकारी पर आधारित होना चाहिए। उपन्यासों को मनोरंजक होना चाहिए, लेकिन उन्हें जानकारी पर आधारित नहीं होना चाहिए।

इतिहास का एक अन्य तत्व यह था कि इसमें सटीकता की आवश्यकता थी। इसका मतलब जरूरी नहीं कि सभी विवरणों पर सटीकता हो। लेकिन इसका मतलब यह है कि यह काफी हद तक सटीक होना चाहिए।

इतिहास के प्रस्ताव के अलावा और भी प्रस्ताव आये हैं। जीवनी प्रस्तावित की गई है। चार्ल्स टैलबर्ट, एक प्रतिभाशाली विद्वान, जिन्होंने जीवनी और सुसमाचार की थीसिस को फिर से जीवंत किया, ठीक ही है, और रिचर्ड ब्यूरिज ने अपने कैम्ब्रिज मोनोग्राफ में दिखाया कि यह सुसमाचार के अनुरूप था।

और अधिकांश विद्वान अब इससे सहमत हैं। टैलबर्ट ने अधिनियमों की पुस्तक के साथ इसके लिए भी तर्क दिया है क्योंकि इसमें प्रमुख पात्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह ल्यूक के सुसमाचार के पहले खंड में भी फिट बैठता है।

तो, आपके पास यीशु और पीटर और पॉल के बीच एक निरंतरता है। और हम इसके बारे में बाद में और अधिक देखेंगे जिसे टैलबर्ट ने सही ढंग से बताया है। टैलबर्ट जीवनी उत्तराधिकार आख्यानो के लिए तर्क देते हैं, विशेष रूप से दार्शनिक जीवनी में, कि कभी-कभी आपके पास एक प्रमुख व्यक्ति होगा और फिर आपके पास अन्य आंकड़ों के साथ उत्तराधिकार आख्यान होंगे।

ऐसी जीवनियाँ थीं जिनमें कई लोग थे, लेकिन आम तौर पर आपके पास अधिनियमों की पुस्तक की तरह एक भी खंड नहीं था, जिसमें केवल पहले भाग में पीटर और दूसरे भाग में पॉल पर ध्यान केंद्रित किया गया था। अतः अधिकांश विद्वान इसे जीवनी नहीं मानते। यह पॉल या पीटर की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है।

और साथ ही, प्राचीन इतिहासलेखन के अधिकांश भाग में आपका जीवनी संबंधी फोकस है। प्राचीन इतिहास को लिखने का एक तरीका प्रमुख पात्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए जीवनी पर ध्यान केंद्रित करना था। बहु-खंड इतिहास में कभी-कभी एक ही चरित्र पर केंद्रित एक या अधिक खंड शामिल होते हैं।

तो, आपके पास बहु-खंड इतिहास था जो कई लेखकों द्वारा लिखा गया था और उनके इतिहास में सिकंदर महान पर एक या दो खंड होंगे। उत्तराधिकार की कथाएँ सिर्फ जीवनी में ही नहीं आतीं।

और विशेष रूप से जब आपके पास उत्तराधिकारियों की केवल दार्शनिक सूचियाँ हों, तो वह उतनी मजबूत नहीं होती हैं।

लेकिन हमारे पास कुछ क्रमिक जीवनियाँ हैं। इसलिए, जबकि मैं अधिकांश विद्वानों से सहमत हूँ कि एक्ट्स एक ऐतिहासिक मोनोग्राफ है, जीवनी एक तरह से इतिहास का एक उपप्रकार था और टैलबर्ट के प्रस्ताव में कई सहायक तत्व हैं। जिस तरह से ल्यूक अपना इतिहास बताता है उसमें एक जीवनी संबंधी फोकस है।

यह उस चीज़ पर भी फिट बैठता है जो हमारे पास पैरेलल लाइव्स में है, कुछ प्राचीन हस्तियों की समानांतर जीवनियाँ। तो, कुछ ओवरलैप हो सकता है। मैं इसे इतिहासलेखन के एक प्रकार के जीवनी संबंधी दृष्टिकोण के रूप में देखता हूँ।

अगले सत्र में, हम उपन्यासों सहित अधिनियमों की शैली के लिए कुछ अन्य प्रस्तावों पर गौर करेंगे, और फिर से बहुमत प्रस्ताव और जिसके लिए मैं तर्क देता हूँ, पर वापस आएंगे, अर्थात् अधिनियमों की पुस्तक एक ऐतिहासिक है मोनोग्राफ.

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 1, लेखकत्व, तिथि और शैली है।